भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ८३वां महाधिवेशन
कांग्रेस अध्यक्ष का उद्घाटन भाषण
बुराड़ी-दिल्ली
१९ दिसंबर, २०१०

स्वाधीनता सेनानीगण,

संचालन समिति के सदस्य,

प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह जी,

प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष,

देश के कोने-कोने से आए प्रतिनिधि भाइयो,

विधायक दलों के नेता,

संसद् सदस्य और विधायकगण,

अग्रिम संगठनों के पदाधिकारी,

बहनो और भाइयो,

I

मैं आप सबका, ख़ास तौर से नये चुने हुए सदस्यों का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इस तिरासीवें महाधिवेशन में स्वागत करती हूं।

आज हम अपनी पार्टी के एक सौ पच्चीसवें वर्ष के समारोहों का समापन भी कर रहे हैं।

ये सवा सौ साल भी क्या खूब थे!

कांग्रेस की स्थापना के समय से ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी कांग्रेसजनों-- महिलाओं और पुरुषों दोनों ने, हमारे देश के इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी है।

महात्मा गांधी ने आज़ादी के लिए लाखों लोगों को अपने साथ जुड़ने की प्रेरणा देते हुए, कांग्रेस को एक नया दर्शन और दिशा दी।

जवाहरलाल नेहरू के दूरदर्शी नेतत्व में संसदीय लोकतंत्र के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, Secularism, योजना, विज्ञान और तकनीक पर आधारित एक नये भारतीय राष्ट्र की नींव रखी गयी। भारत के औद्योगीकरण के शुरुआती क़दम उठाए गये। देश को ग़रीबी, अज्ञान, भेद-भाव और बीमारी से मुक्त करने की पहल हुई। कमज़ोर वर्गों के सशक्तिकरण के लिए पहली बार उपाय किए गये।

लालबहादुर शास्त्री का नारा 'जय जवान, जय किसान' आज भी पूरे देश में गूंजता है।

इंदिरा गांधी ने ग़रीबों और कम भाग्यशाली लोगों के प्रति अपनी गहरी चिंता की वजह से पार्टी को एक नया बल दिया। उनके नेतत्व ने हमें गौरव और आत्म-विश्वास दिया। उनका साहस और दढ़-विश्वास हमें लगातार संभाले हुए है।

राजीव गांधी हमारे साथ बहुत थोड़े समय के लिए थे। लेकिन उस घटना-पूर्ण समय में उन्होंने हमारे देश को एक सुदढ़ स्थिति के साथ मज़बूती से इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश के रास्ते पर पहुंचा दिया।

पी०वी० नरसिंह राव ने आर्थिक सुधारों को एक नया रूप दिया।

पिछले एक शताब्दी से भी ज़्यादा के समय में हमारी पार्टी ने अनेक जीत और हार देखी हैं, अनेक बाधाओं का सामना किया है, अनेक चुनौतियां पार की हैं। इस दौरान भविष्य का सामना करने के लिए पार्टी ने हमेशा एक प्रबल उत्थान-शक्ति और इच्छा-शक्ति दिखायी है।

इसलिए यह स्वाभाविक है, कि हम गर्व के साथ पीछे मुड़कर देखें।

मैं समझती हूं, आप भी समझते हैं, कि हम कितने भाग्यशाली हैं, कि हम एक विरासत के उत्तराधिकारी हैं, एक ऐसी विरासत, जो दष्टि और मूल्यों की विरासत है, जो समर्पण और संवेदना की विरासत है।

लेकिन हमारे लिए यह ज़रूरी है, कि हम आत्म-चिंतन करें, कि जो महान् विरासत हमें मिली है, उस पर हम किस सीमा तक पक्के तौर पर अडिग रहे हैं।

यही इस महाधिवेशन का उद्देश्य है।

हम सिर्फ़ अपने अतीत का उत्सव मनाने के लिए नहीं इकट्ठा हुए हैं।

हम यहां एक नये संकल्प के लिए इकट्ठा हुए हैं। एक सेवा का संकल्प और एक नवीनता का संकल्प। यह संकल्प सिर्फ़ एक पार्टी की ज़रूरत नहीं है, बल्कि एक व्यापक राष्ट्रीय आवश्यकता है।

II

साथियो,

आपने मुझे बारह साल से भी ज़्यादा समय तक पार्टी की देख-रेख का काम सौंपा। इस बीच हमने जो कुछ भी हासिल किया है, वह आपकी सहायता, आपके कठिन परिश्रम के बल पर ही संभव हो सका है।

हम कई वजहों से एक बेमिसाल पार्टी हैं और उसमें सबसे महत्वपूर्ण यह है, कि इसमें अपनी पूरी अनेकता के साथ पूरे भारत का स्वरूप साकार होता है।

हम देश का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन हैं, एक अकेला संगठन, जो भारत के एक-एक कोने से दूसरे कोने तक मौजूद है और मज़बूत है। सारे देश में हमारे पास आप जैसे लाखों-लाखों समर्पित कार्यकर्ता हैं। वे आपकी तरह से ही हमारे संगठन के स्तंभ हैं।

हम अकेली पार्टी हैं, जिसे समाज के सभी वर्गों से शक्ति प्राप्त होती है। एक ऐसी अकेली पार्टी, जिसके कार्यक्रमों के केंद्र में ग़रीबों, वंचितों और सुविधा-हीन लोगों का कल्याण है।

लोगों के बीच हमारी पार्टी के प्रति सद्भावना का एक विशाल भंडार है, जिसने हमको दुबारा अधिक शक्ति के साथ केंद्र सरकार का नेतत्व सौंपा है।

हमें इस अमूल्य संपत्ति को संभाल कर रखना है।

लेकिन इसी के साथ हमें अपनी कमज़ोरियों पर भी ध्यान देना है, जो समय-समय पर दिखती हैं।

हमें एक विशाल चुनाव मशीन से कुछ ज़्यादा बनने की ज़रूरत है।

हमारे दरवाज़े जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों के लिए, समाज के सभी वर्गों के लिए खुले होने चाहिए। भले ही कांग्रेस शानदार पुरानी पार्टी हो, लेकिन इसे उम्र और अनुभव के अलावा युवा-शक्ति और जीवंतता की पार्टी भी होना चाहिए, इसीलिए हम ज़्यादा से ज़्यादा युवाओं के प्रवेश का स्वागत करते हैं। युवक कांग्रेस और NSUI ने लोकतांत्रिक, व्यवस्थित और पेशेवर ढंग से एक बहुत बड़ा सदस्यता अभियान चलाया है। इन प्रयासों के रचनात्मक परिणाम भी सामने आने लगे हैं।

अपने इतिहास में कांग्रेस बदलती हुई राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप एक विचारों की पार्टी रही है। मेरी यह निश्चित राय है, कि हमें समय-समय पर एक साथ आत्म-चिंतन करते रहना चाहिए और अगर ज़रूरी हो, तो समय की गति के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी दष्टि का पुनर्मूल्यांकन करते रहना चाहिए। यही वजह है, कि पिछले समय में हमने पंचमढ़ी में विचार-मंथन शिविर और शिमला में चिंतन-शिविर आयोजित किए थे। आने वाले महीनों में भी हम इस तरह का एक आयोजन करेंगे। इससे हमें महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर अपने दष्टि-कोण को ताज़ा करने और संगठन की कार्य-शैली की समीक्षा करने का अवसर मिलेगा। यह अपनी पार्टी के साथियों, ख़ास तौर से युवा साथियों की राय सुनने का भी एक मौक़ा होगा, जिससे हम अपने विचारों में नयी ऊर्जा लाएं।

मुझे अच्छी तरह मालूम है, कि कुछ प्रदेशों में कितना ज़्यादा काम करने की ज़रूरत है। हाल में बिहार के चुनाव ने यह अच्छी तरह साफ़ कर दिया है, कि पार्टी को ज़मीनी स्तर से नये सिरे से बनाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। इसके अलावा और कोई आसान रास्ता नहीं है, कोई Short-Cut नहीं है। आगे का मार्ग लंबा है और कठिन है। लेकिन हम दढ़ रहेंगे और सफल होंगे। यह सभी प्रदेशों में, उनके समेत जहां हमारा गठबंधन है, रचनात्मक काम करने का समय है।

जहां भी हम सरकार में हैं, चाहे वह केंद्र हो या राज्य, वहां यह किसी को नहीं भूलना चाहिए, कि यह पार्टी ही है, जो सरकार बनाती है। जो लोग पदों पर हैं, यह उनकी पहली ज़िम्मेदारी बनती है, कि वे पार्टी संगठन और कार्यकर्ताओं की राय के प्रति संवेदनशील हों। पार्टी कार्यकर्ताओं की बात गंभीरता से सुनी जानी चाहिए और जहां जो मुनासिब हो वह कार्रवाई होनी चाहिए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए, कि साधारण कार्यकर्ता ही हमारे कान हैं, जो हमें ज़मीनी हक़ीकत बताते हैं और वही हमारे हाथ हैं, जो आम आदमी की नब्ज़ पहचानते हैं।

उन प्रदेशों में जहां हम सरकार में नहीं हैं, एक नयी परिस्थिति पैदा हुई है। हमारी सरकार डॉ० मनमोहन सिंह जी के नेतत्व में बिना किसी भेद-भाव के सभी प्रदेशों को इतनी आर्थिक सहायता दे रही है, जितना पहले कभी नहीं मिला। वहां पर हमारे पार्टी कार्यकर्ताओं का यह कर्तव्य है, कि वे निगरानी रखें, जिससे यह धन उन लोगों तक ज़रूर पहुंचे, जिनके लिए भेजा गया है। वे लोगों को अपनी यूपीए सरकार की उस भूमिका की जानकारी दें, कि किस तरह उसने इन योजनाओं के लिए पैसे की व्यवस्था की है और राज्यों को भेजा है। उन्हें विपक्ष की ऐसी किसी भी कोशिश का खंडन करना चाहिए, जब वे लोगों को भ्रमित करके स्वयं इसका श्रेय लेना चाहते हैं।

इसके साथ ही विपक्ष द्वारा शासित प्रदेशों के तमाम पार्टी कार्यकर्ताओं ने मुझसे यह शिकायत की है, कि खुद हमारे केंद्र के मंत्री पूरी तरह उनकी चिंताओं पर ध्यान नहीं देते। उनकी यह बात सही है। केंद्रीय मंत्रियों को चाहिए कि वे ख़ास तौर से अपनी यात्राओं के दौरान स्थानीय कांग्रेस नेतत्व से ज़रूर मिलें-जुलें। उनको इतना पता होना चाहिए, कि जो पार्टी कार्यकर्ता एक विरोधी वातावरण में काम करते हैं, ऐसी उपेक्षा से उनका मनोबल गिरता है।

हमारी पार्टी को समाज और अलग-अलग तरह के विशेषज्ञों के साथ लगातार और सुचारु तरीक़े से संपर्क में रहना चाहिए। मैं यह सोचती हूं, कि इस समय ज़रूरी है, कि पार्टी में एक चिंतन-समूह बने, जो संस्थानों की शैली से काम करे। आने वाले शिविर में हम इस विषय को भी लेंगे।

III

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अहिंसा को एक राजनीतिक और व्यावहारिक अर्थ दिया था। इसलिए हमारे देश में हिंसा की जटिल समस्या को बढ़ते हुए देखना और ज़्यादा दु:ख की बात है।

जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी गुटों का सामना करना पड़ रहा है। अनेक प्रदेशों में नक्सलवादी, हिंसा के ज़रिए लोकतांत्रिक व्यवस्था को नकारते हैं। उत्तर-पूर्व के कुछ हिस्सों में उग्रवादी तत्व, शांति और व्यवस्था में बाधा पहुंचाकर वसूली करने लगे हैं। जो भी साधन हमारे पास हैं, उनका इस्तेमाल करके, इन तत्वों का मुक़ाबला करना ही होगा।

फिर भी देश के अशांत क्षेत्रों में संवाद के द्वार खुले रखने होंगे, राजनीतिक समझौतों की संभावना को बनाए रखना होगा। इसी तरीक़े से ढाई दशक पहले राजीव जी ने पंजाब, असम, मिज़ोरम, त्रिपुरा और दार्जिलिंग में शांति स्थापित की थी। समन्वय और स्थायी शांति का यही एक रास्ता है।

इस दष्टि-कोण को सचमुच सार्थक बनाने के लिए यह ज़रूरी है, कि हम समझें, कि हिंसा की वजह क्या है और वह क्या है, जिसकी वजह से यह जारी रहती है। कुछ क्षेत्रों में एक लंबे समय से बिना सुलझे हुए सामाजिक, आर्थिक मुद्दे, देश-विरोधी शक्तियों को काम करने और उनके प्रति सहानुभूति पैदा करने के लिए एक उपजाऊ ज़मीन मिलती है।

जम्मू-कश्मीर में यह ज़रूरी है, कि हम इसका जवाब ढूंढें, कि एक पूरी नयी पीढ़ी कैसे अलग-थलग पड़ गयी है और जिसने हिंसा के अलावा और कुछ नहीं देखा। हमारे सुरक्षा-बल हिम्मत और धीरज के साथ एक कठिन स्थिति का सामना कर रहे हैं। लेकिन उसी समय राजनीतिक प्रक्रिया को भी नयी शक्ति मिलनी चाहिए और उस पर ध्यान देना चाहिए। हमारी सरकार ने वार्ताकार नियुक्त करके यही प्रयास किया है।

नक्सली गतिविधि से प्रभावित क्षेत्रों में, हमें ख़ास तौर से आदिवासी समुदायों के, ज़मीन और जीविका के समाप्त होने, और यहां तक कि, बुनियादी सुविधाओं के भी न होने जैसे, रोज़-मर्रा के मुद्दों का हल ढूंढना होगा। यह पुलिस की क्षमता और प्रभाव को बढ़ाने के साथ ही साथ करना होगा।

अभी हाल के वाराणसी के बम-विस्फोट ने हमें यह याद दिलाया है, कि हम अपनी सावधानी में कोई भी ढील नहीं दे सकते। जो तत्व और संगठन, सीमा पार से सक्रिय होकर आतंकवाद को फैला रहे हैं, हमारे सामाजिक ताने-बाने को नष्ट करके, हमें आर्थिक रूप से कमज़ोर करना चाहते हैं, उन तत्वों का सामना करने के, हमारे दढ़ संकल्प पर किसी को शक़ नहीं होना चाहिए।

IV

Secularism के प्रति गहरी और अडिग प्रतिबद्धता, भारत की पहचान है। यह एक ऐसा मूल्य है, जो हमारी लोक-रीति और संस्कृति में जड़ा हुआ है। हमारे लिए Secularism धर्म को नकारना नहीं है। दूसरे धर्मों के प्रति संमान, उदारता, दूसरे की आस्थाओं और विश्वासों को आदर देना, शुरू से हमारी परंपरा है। कांग्रेस पार्टी ने हमेशा सब तरह की सांप्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष किया है, चाहे उसका स्रोत जो भी हो।

सांप्रदायिकता क्या है?

यह अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए धर्म का दुरुपयोग है। यह नफ़रत और कट्टरता फ़ैलाने के लिए धर्म का दुरुपयोग है। यह हमारे समाज में दीवारें खड़ी करने और हमें बांटने के लिए धर्म का दुरुपयोग है।

हम उन व्यक्तियों, संस्थाओं और विचार-धाराओं के विनाशकारी असर को नज़रंदाज़ नहीं कर सकते, जो हमारे इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, जो धार्मिक द्वेष फैलाते हैं और जो धर्म की आड़ में लोगों को हिंसा के लिए उकसाते हैं।

कांग्रेस पार्टी की निगाह में सांप्रदायिकता और उससे जुड़े आतंकवादी काम, चाहे वे Majority संगठनों के हों या Minority के-- दोनों में कोई फ़र्क नहीं है। दोनों ही ख़तरनाक हैं और वे ख़त्म होने ही चाहिए।

Secular आधार के बिना भारत, वह भारत नहीं रहेगा, जिसके लिए हमारे पूर्वजों और महान् नेताओं ने कठिन संघर्ष किया था और यहां तक कि अपने प्राणों की बलि दी थी।

एक कांग्रेसजन के रूप में यह हमारा पवित्र कर्तव्य है, कि हम Secular आदर्श का संमान करें, उसकी रक्षा करें, उसे आगे बढ़ाएं और हमेशा निर्भय होकर उसे अपने जीवन में अपनाएं।

V

Friends, there is no doubt that corruption at all levels has become a disease spreading throughout our society. The poor pay the heaviest price for it, bear its greatest burden. The RTI legislation is bringing about a new culture of transparency and accountability. The Lok Pal Bill awaiting introduction in Parliament will strengthen this process.

There should be no tolerance for corruption or misconduct. We have demonstrated this through our actions. Even when no charge has been established, we have asked our ministers and our chief ministers to step down, pending inquiry. How many other parties can make such a claim? Can the BJP do so in regard to Karnataka where corruption is rampant or other states? Can the Left parties do so in regard to states where they are ruling? Can anything possibly justify bringing Parliament to a halt? Can the Opposition justify undermining the norms on which a parliamentary democracy functions? Surely, Parliament cannot be held hostage to political blackmail, to expediency. Parliament itself is the forum to discuss and resolve contentious issues.

In this context, I want to say something about our Prime Minister. He is the embodiment of sobriety, dignity and integrity. The BJP's personal attack on him is downright despicable. And I expect all of you to go out to explain again and again. On your behalf, I want to compliment him for his wise leadership, for remaining calm amidst the storm and for his unwavering devotion to the progress and prosperity of the nation. The Party stands solidly with him.

I believe that both as a party and as a government we must confront corruption head-on. State funding of elections has been talked about in different forums from time to time. We should now consider how best to take this proposal forward decisively. Beyond this, here is how I believe we can intensify our battle against corruption.

First, there is merit in instituting a new system of fast-tracking all cases that concern corruption by public servants, including politicians. Such cases drag on interminably and undermine public confidence and trust. Why can't we put in place systems that bring corruption cases to closure in a defined time-frame? This, it is my belief, would bring the guilty to book quickly and clear those unfairly charged.

Second, we must ensure, through legislation and clear procedures, full transparency in public procurement and contracts. It is the duty of the administration to ensure that there is no subversion of due process. And should it come to pass, whistle blowers must be protected.

Third, we have ample evidence that all discretionary powers, particularly in land allocation breed corruption. I would like all Congress chief ministers and Ministers at both the Centre and states, to set an example by reviewing and relinquishing such powers.

Fourth, we need an open, competitive system of exploiting natural resources. This is something we promised in our 2009 election manifesto and it has now assumed much greater urgency.

Congressmen and women holding office must not allow any doubt about their probity and integrity. It ill becomes representatives of a Party claiming to speak for the poor to indulge in greed, extravagance and luxury. Simplicity, restraint and austerity must be our chosen way. We cannot make this a law. But in a country where poverty is still widespread, let us at least have the moral sensibility to avoid vulgar displays of wealth and waste.

VI

Since May 2004 under our Prime Minister's leadership, the economy has moved on to a much higher growth path. His stewardship through the global crisis is acknowledged universally. It is this high economic growth that has enabled us to fund our social welfare programmes and schemes. It has also enabled our government to transfer unprecedented financial resources to all the states.

As we sustain the momentum of high economic growth, we face some crucial challenges.

Prices of essential commodities particularly must always be kept at affordable levels and inflation kept in check.

Our environment, forests and biodiversity must be protected and regenerated.

The benefits of growth must be shared equitably with the weaker sections of society.

Our government is dealing with these challenges. The inflation rate has declined considerably in recent months. Allocations for our flagship schemes have increased enormously. But merely spending more money or attaining expanded numerical targets is not enough.

Subsidies meant for the poor must reach the poor and the poor alone. Subsidies enjoyed by the relatively well-off must be redirected to those in need. It is essential that the quality of public education and health care is vastly improved. These are vital building-blocks of an inclusive society. This is how equality of opportunity and social mobility will reach everybody.

It is here that all of you can play a valuable and constructive role by acting as watchdogs at local levels. You must mobilise and organise beneficiaries, make sure that job cards are given, due wages paid, ration shops function, primary health centres run properly and teachers report for work in schools.

VII

Before I end, let me say that our future will be shaped not by a magic wand or by any single individual. Our future will depend on our party's capacity to work together as a team and to ensure that our organisation does not pull in different directions. There are always personal disappointments in politics as in other walks of life. I can understand individual ambitions but when they are not fulfilled, the party's cohesion should not be jeopardised. The party must always come before the individual.

Friends, there is a new aspiration in our country. The Congress must recognise this and make itself the instrument of its fulfilment. It can only do so by mobilising its collective political will.

We are a party with a glorious past.

We are the party of the future, It is for us to ensure that it holds out hope for each and every Indian. That is our calling and our obligation.

Let the message go forth from this Plenary that the Congress is aware of its strengths, conscious of its responsibilities.

Together we will build on our strengths.

Together we will honour our responsibilities.

Together we will strive our utmost to prove worthy of the trust and confidence that the people continue to repose in us.

Jai Hind.